

GSEB Std 10 Hindi Textbook Solutions Chapter 10 जीने की कला

GSEB Class 10 Hindi Solutions जीने की कला Textbook Questions and Answers

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

प्रश्न 1.

मनुष्य जीवन को किस काम में लाया जाना चाहिए ?

- (अ) जीवन को समझने
- (ब) हँसी-खुशी में बिताने
- (क) सरल काम करने
- (ड) विकट काम करने

उत्तर :

- (ब) हँसी-खुशी में बिताने

प्रश्न 2.

आदमी ज्यादा धार्मिक, फिलासफर और सदाचारी लगता है, ऐसा लोग कब समझते हैं ?

- (अ) जब वह बुझेदिल हो
- (य) जब वह प्रसन्न हो
- (क) जब वह धर्म की बात करते हो
- (ड) जब वह पवित्र हो

उत्तर :

- (अ) जब वह बुझेदिल हो

प्रश्न 3.

लेखक के मतानुसार जीवन की समस्याओं को किस प्रजा ने ठीक से समझा था ?

- (अ) प्राचीन भारतीय
- (ब) अमेरिकन
- (क) चीनी
- (ड) आधुनिक भारतीय

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

प्रश्न 1.

जीवन की सबसे बड़ी गुत्थी कैसे सुलझायी जाय ?

उत्तर :

हंसी-खुशी से जीवन जीकर जीवन की सबसे बड़ी गुत्थी को सुलझाया जा सकता है।

प्रश्न 2.

जीवन की समस्या किसने ठीक समझा था ?

उत्तर :

चीनियों ने जीवन की समस्या को ठीक से समझा था।

प्रश्न 3.

दुनिया में सबसे बड़ा बुद्धिमान कौन है ?

उत्तर :

जो सबसे ज्यादा खुश रहता है, वह दुनिया में सबसे बड़ा बुद्धिमान है।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

प्रश्न 1.

प्रसन्न रहने की कला क्या है ?

उत्तर :

जीवन का उद्देश्य आनंद प्राप्त करना है। इसके लिए प्रसन्न रहना बहुत जरूरी है। खिले हुए सुंदर फूल, बहते हुए झरने, गाते हुए पंछी, पेड़ों का नृत्य, टिमटिमाते तारे, चाँद के हंसते चेहरे और चमकते सूरज आदि को देखकर हम प्रसन्न होते हैं। प्रसन्न रहने के लिए इनका अवलोकन करना चाहिए।

प्रश्न 2.

'खुश रहना केवल एक जरूरत नहीं, यह एक नैतिक उत्तरदायित्व भी है'- कैसे ?

उत्तर :

मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन का प्रभाव उस तक ही सीमित नहीं रहता। वह दूसरों पर भी पड़ता है। सुख-दुःख की छूत दूसरों को भी लगती है। हम उदास रहेंगे, तो हमें देखकर दूसरे भी उदास होंगे। हम खुश रहेंगे, तो हमें देखकर दूसरे भी खुश होंगे। इस तरह खुश रहना केवल एक जरूरत ही नहीं, यह एक नैतिक उत्तरदायित्व भी है।

प्रश्न 3.

हमारी खुशी हमें कब खुश नहीं कर सकती ?

उत्तर : हम जो कुछ अपने लिए करते हैं, उसमें भी दूसरों का भाग होता है। हम खुद खुश होकर

दूसरों को खुश करते हैं और दूसरों को खुश देखकर खद खुश होने लगते हैं। लेकिन जब हमारे चारों तरफ उदास चेहरे जमा हो जाएं, तब हमारी अपनी खुशी हमें खुश नहीं कर सकती।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तार उत्तर लिखिए :

प्रश्न 1.

आदमी का जीवन उसकी अपनी व्यक्तिगत जायदाद क्यों नहीं है ?

उत्तर :

हमारा जीवन एक शीशायर है। हम जो भी करते हैं, उसका प्रतिबिंब एक ही समय में सैकड़ों लोगों पर पड़ता है। हर आदमी पूर्णसंग्रह का अंश है। वह जो कुछ अपने लिए करता है, उसमें दूसरों का भाग होता है। दूसरे लोग जो कुछ करते हैं उससे वह प्रभावित होता है। इसलिए आदमी का जीवन उसकी अपनी व्यक्तिगत जायदाद नहीं है।

प्रश्न 2.

हम बुझे हुए दिल और सूखे हुए चेहरे के साथ कहाँ स्थान नहीं प्राप्त कर सकते ?

उत्तर :

बुझे हुए दिल और सूखे हुए चेहरे धर्म, फिलासफी और सदाचार के प्रतीक माने जाते हैं। जिस चित्र में सूरज का चमकता हुआ मस्तक, चाँद का हंसता हुआ चेहरा, तारों की झिलमिलाती हुई आँखें, पेड़ों का नृत्य, पंछियों का संगीत, बहते हुए पानी की तरंगें तथा खिलते हुए फूलों की बहारे अपनी शोभा दिखा रही हों, वहाँ हम बुझे हुए दिल और सूखे हुए चेहरों के साथ स्थान नहीं प्राप्त कर सकते।

5. निम्नलिखित शब्दों से कर्तृवाचक संज्ञा बनाइए :

प्रश्न 1.

1. कला -
2. नीति -
3. बात -
4. दिल -
5. सदाचार -
6. संगीत -
7. नृत्य -

उत्तर :

1. कला - कलाकार
2. नीति - नीतिज्ञ
3. बात - बातूनी

4. दिल - दिलदार
5. सदाचार - सदाचारी
6. संगीत - संगीतकार
7. नृत्य - नर्तक

6. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाइए :

प्रश्न 1.

1. संसार
2. विश्वास
3. प्रतिबिंब
4. प्रकृति
5. समय
6. अंश

उत्तर :

1. सांसारिक
2. विश्वसनीय
3. प्रतिबिंबित
4. प्राकृतिक
5. सामयिक
6. आंशिक

7. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए :

प्रश्न 1.

1. प्रसन्न -
2. सरल -
3. बड़ा -
4. खुश -
5. उदास -
6. बहुत -
7. आदमी -

उत्तर :

1. प्रसन्न - प्रसन्नता

2. सरल - सरलता
3. बड़ा - बड़प्पन
4. खुश - खुशी
5. उदास - उदासी
6. बहुत - बहुतायत
7. आदमी - आदमियत

